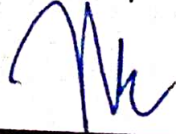


16.06.22

पत्रावली पेश हुई। वकील वसुधाकांत
 उवासीत। बाद प्रस्तुतकर्ता वकील श्रीमि,
 जो कि मंदिर माफ़ी की श्रुति है, उसके
 रेकार्ड खानेदार बनीं हैं, वकील ग्रामवासियों
 हैं, जिन्होंने लोकहित में यह वाद प्रस्तुत
 किया है। पत्रावली पर उपलब्ध दस्तावेज,
 जवाब का अवलोकन कर बहस पर अवन
 उफ़ाल न्यायालय को यह लगता है कि यह
 वाद विधिक रूप से घोषणीय ना होने के
 कारण स्थायी कोष व निरस्तनीय है व
 वादीजग श्रुति विवेधाना पाने के पात्र नहीं
 है। परंतु, मंदिर माफ़ी की श्रुति का
 दुर्लभयोग शीका जाकर अंशक संरक्षण करवा
 राजस्व न्यायालय का एक अति महत्वपूर्ण
 दायित्व भी है। ग्रामवासियों को लोकहित में
 यह संशय है कि मंदिर माफ़ी की श्रुति
 व संसाधनों का दुर्लभयोग हो सकता है।
 इस संदर्भ में न्यायालय यह विवेचना
 करना न्यायोचित समझता है कि जमावदी
 में रेकार्ड मंदिर माफ़ी श्रुति का पुजारी
 उसके मातार-संभाल के लिए संरक्षक
 मात्र है व उसके संसाधनों का निजी लिए

 अमरा! ~~~~

में उपयोग-उपयोग करने का अधिकारी नहीं है। अतः यह न्यायालय इस विदायत के साथ पुजारी/अव्य संरक्षकों को इस हेतु गारंज किया जाका उचित समझता है कि मंदिर माफ़ी प्रमाण को उज्जत किया जाना एक सामान्य व उचित प्रक्रिया है, परंतु इस प्रयास में मंदिर माफ़ी श्रुति के संसाधन जैसे- मिट्टी, पेट व मंदिर में रखे वस्तु / अव्य सामग्री का निजी प्रयोजनार्थ उपयोग-उपयोग ना किया जाये। न्यायालय यह आदेश करवा व्यापकता के समझता है कि इन संसाधनों का इसी मंदिर माफ़ी श्रुति को उज्जत करने में उपयोग किया जाये व इस श्रुति की सीमा से बाहर इन संसाधनों का आवागमन ना हो। दावा स्थायी विवेधाना खारिज किया जाता है। पत्रावली कैसल सुनार लेकर बंदर से कम की जाकर दाखिल दफ़तर हो। कैसल खुले न्यायालय में सुनाया जाकर यदि हस्ताक्षर व न्यायालय मुद्रा से जारी किया गया।

उपरोक्त अधिकारी
< सांभर लेक